प्रातःक्लास 8.4.68 ओमशान्ति ''शिवबाबा याद है?''

ओमशान्ति। शिव भगवानुवाचः जैसे और पंडित लोग कृष्ण भगवानुवाच कहते हैं या व्यास–भगवानुवाच ,वशिष्ट भगवानुवाच कहते हैं वह तो सभी शरीर के ही नाम हैं। और यह तो है शिव भगवानुवाच। इनके शरीर का नाम तो ब्रह्मा है। यह अपना नाम नहीं लेते हैं। कहते हैं शिव भगवानुवाच बच्चों प्रति; क्योंकि बच्चे ही जानते हैं कि शिवबाबा हमको राजयोग सिखाते हैं। तन तो ब्रह्मा का ही लेते हैं। उनको भागीरथ कहा जाता है। तुम समझते हो बरोबर शिवबाबा का निवास स्थान परमधाम है। ज़रूर बाप परमधाम से आकर कहते हैं शिव भगवानुवाच। अच्छा, अभी पहले मनोहर बेटी से प्रश्न पूछते हैं कि एक है ज्ञान, दूसरा है योग। अभी पहले योग है वा ज्ञान? एक अक्षर में रेसपॉन्ड करो। शिवबाबा आकर के क्यों बतलाते हैं? (ज्ञान) अच्छा योग बड़ा या ज्ञान बड़ा? (योग बड़ा है; परन्तु योग के लिए भी ज्ञान चाहिए।) पहले–2 तो बाप है ज्ञान का सागर। पहले योग के लिए ज्ञान देते हैं। फिर सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का भी ज्ञान देते हैं। पहले ज्ञान देते ही हैं याद की। मुख्य बात ही है बाप को याद करने की। फिर है वर्सा। यह है ही नई–2 बातें। तुम्हारी बुद्धि ऊपर चली जाती है। बाबा आकर हमको पढ़ाते हैं। ज्ञान देते हैं। और कोई जगह ऐसी बात होती नहीं। बच्चों को निश्चय है बाप आकर हमको पढ़ाते हैं। यह भी निश्चय है शिवबाबा की यह स्थापना की (हु)ई रूहानी यूनिवर्सिटी है। अभी हम यह बाहर वालों को कैसे समझावें कि हम यह पढ़ते हैं, जिस पढ़ाई से यह बड़े ते बड़ा मर्तबा पाते हैं। है तो ज़रूर भगवानुवाच .... बच्चों में तुमको राजयोग सिखलाता हूं। राजाओं का राजा बनाता हूं। हम पढ़ते हैं। जैसे यह माथुर जी है अथवा कोई बड़े पोजिशन वाला फिमेल्स है, तुमसे कोई पूछते हैं कहां जाते हो इस समय? तो बोलना चाहिए हम जाते हैं रूहानी यूनिवर्सिटी में पढ़ने लिए। हम स्टूडेन्ट है, पढ़ाई पढ़ने जाते हैं। यह बहुत ऊँच ते ऊँच पढ़ाई है। कौन सी ऊँच ते ऊँच पढ़ाई है? मनुष्य से देवता अथवा विश्व का मालिक बनने की। यह देवताएं विश्व के मालिक थे ना। यह तो बच्चे जानते हैं इस पढ़ाई में सब आ जाता है। रूहानी यूनिवर्सिटी में हम पढ़ते हैं उसमें हम सभी मिनिस्टरी भी पास करते हैं, हेल्थ की यूनिवर्सिटी भी पढ़ते हैं, फूड मिनिस्टरी भी पढ़ते हैं। एक ही बाप हमको सब पढ़ाते हैं। कैरेक्टर्स सुधारने लिए भी पढ़ते हैं। ऐसी कोई पढ़ाई नहीं रहती जो तुम न पढ़ते हो। उन्हों का तो अलग–2 नाम है। फूड मिनिस्टर अलग, एड्युकेशन मिनिस्टर अलग। तुम तो सब बनते हो। बड़े ट्रेईयर भी हो। तुम्हारे जैसा ट्रेईयर कोई हो न सके। तो बच्चों को ऐसे–2 विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। बाबा जानते हैं कर्मातीत अवस्था पहुँचने में टाइम लगेगा; परन्तु प्वाइन्ट्स सभी बुद्धि में धारण की है। करनी है। जब कोई मिनिस्टर आदि मिलते हैं तो बोलना चाहिए हम यहां सभी सीखते हैं। हेल्थ मिनिस्टरी, फुल मिनिस्टरी सब सीखते हैं और हमको ईश्वरीय मत मिलती है। जिससे सारा हमारा यह भारत एवर हेल्दी, ऐवर वेल्दी बन जाता है। सुना है भारत की आयु कितनी बड़ी थी? हम वहां जाते हैं। हमको ऐसे बाप से श्रीमत मिलती है, जो हम कब भी कंगाल नहीं बनते हैं। वहां बजट आदि निकलती नहीं। वहां तो अनगिनत धन होता है। हम एवर हेल्दी बनने लिए पढ़ते हैं। योग से एवर हेल्दी बन जाते हैं। बाप से पढ़ने लिए हम जाते हैं। एक पास सब नॉलेज है। जो भी मिनिस्टर्स हैं लैंड मिनिस्टरी, बल्डींग मिनिस्टरी, तुम क्या–2 पढ़ते हो। बच्चों को अन्दर में खुशी भी होनी चाहिए। और ऐसी पढ़ाई में बच्चों का अटेन्शन भी बहुत देना चाहिए। एक/दो में रूठ कर पढ़ाई छोड़ देते या कह देते फुर्सत नहीं, यह भी ठीक नहीं है। इसमें फुर्सत की तो बात ही नहीं। कैसे भी करके पढ़ना है। बाहर में मुरली द्वारा सभी कुछ मिलता है। मुरली ही मशहूर है। कृष्ण को मुरलीधर कह दिया है; परन्तु अर्थ तो कुछ भी समझते नहीं। अभी तुम समझते हो शिवबाबा क्या कमाल कर देते हैं। जो भी पढ़ाईयां हैं उनका तंत हमको पढ़ा देते हैं। इसमें कोई किताब आदि उठाने आदि की बात नहीं रहती। यह है रूहानी स्प्रीचुअल यूनिवर्सिटी। वास्तव में प्वाइन्ट्स नोट करने की भी दरकार नहीं; परन्तु बुद्धि कोई की कैसी, कोई की

कैसी है; इसलिए नोट करते हैं। कोई को तो नोट करने से भी धारणा नहीं होती है। कोई तो नहीं नोट करते हैं फिर भी धारण कर और कराते हैं। यह तो (मोस्ट) ईज़ी है। सारी पढ़ाई का तंत निकलता है मीठे–2 बच्चों मामेकं याद करो तो मैं गैरन्टरी करता हूं तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। भगवान बाप आकर गैरन्टी करते हैं। वह साधु लोग आदि तो गैरन्टी करते हैं बच्चा (मांगा) अगर बच्ची पैदा हो गई तो कहेंगे भावी। बाकी तो तलसम आदि सीखते हैं आग से, पानी से चले जाते हैं, यह तो सभी हैं स्थूल बातें। यहां यह है आत्मा और परमात्मा। आत्मा का ज्ञान भी परमात्मा बाप ही देते हैं शरीर द्वारा। तो बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चों मुझे याद करो। हम आये ही हैं तुमको सतोप्रधान बनाने लिए। आत्मा पतित तमोप्रधान बनी है, वह पावन सतोप्रधान कैसे बने मुख्य है यह बात। हम सतोप्रधान यह देवता थे। अभी बच्चों को मालूम पड़ा है 84 जन्म हमने लिए हैं। तो ऐसे भगवाान बाप से कब भी बेमुख न होना चाहिए। याद और पढ़ाई है मुख्य। बहुत बेमुख हो पड़ते हैं। रूसते हैं। कुमारी की कुमार साथ सगाई होती है तो कितना उनको याद करते हैं। फिर उनसे फायदा क्या होता है? कुछ भी नहीं। अभी तो तुमको याद करना ही है एक बाप को। जिससे इतना भारी वर्सा मिलता है। यह बातें होती ही हैं संगमयुग पर। तो बच्चों को कितनी मीठी–2 अच्छी बातें सुनाता हूं। प्यार करता हूं। ऐसे तो नहीं टीचर रूप में पढ़ाकर घर चला जाता हूं। तुम बाप के पास आते हो ना। उस पढ़ाई में ऐसे थोड़े ही मिलने आते हैं। इसमें तो बाप भी है, टीचर भी है। याद की यात्रा भी सिखलाते हैं। डायरैक्शन देते हैं और कहां भी न जाओ। सिर्फ़ एक बाप को ही याद करो। निष्ठा में खास कोई बैठना होता है क्या? समझते हैं बाप भी ज़रूर अपने स्वधर्म में बैठेंगे। बाप का स्वधर्म है शान्त। तुम बच्चों का भी स्वधर्म है शान्ति। हम शान्तिधाम के रहवासी हैं। जिसको परमधाम कहते हैं। अभी हम संत के संग में बैठे हैं। सत्य है ईश्वर। वह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरू भी है, साथ में ले जाने वाला भी है। यह तो बुद्धि में रहना चाहिए ना। खुशी भी रहे। इसमें डिफीकल्ट कुछ भी नहीं है। वह तो कितने टाइटल्स रखते हैं। डॉक्टर ऑफ फिलासफी । उसकी टोपी अलग रखते हैं। यहां तो कोई बात नहीं। यह तो सिम्पुल है। जैसा सिम्पुल बाप, वैसा सिम्पुल ज्ञान है। सिम्पुल योग है। सहज ज्ञान सहज योग। बोलना–करना, उठना–बैठना बहुत ही सहज है। बाप कितना सहज बात सुनाते हैं। यहां तुमको अच्छी रीत समझाया जाता है फिर जब घर में जाते हो तो कोई कहां से याद आता है, कोई कहां से याद आता। यहां की बातें सभी भूल जाते हैं। बाबा युक्तियां तो बहुत ही बतलाते हैं घूमने जाओ तो भी बातें यह बातें करो। मन्दिर में भी जाओ तो यही समझाओ। तुमको मालूम है तुम भी इस पुरुषार्थ से इन जैसा बन सकते हो। यह है पूज्य। ज़रूर इन्होंने 84 जन्म लिये होंगे। पुजारी बने होंगे। ज्ञान के पीछे भक्ति ज़रूर है। पूज्य के बाद पुजारी ज़रूर है। तो जो सर्विस पर तत्पर रहते हैं वही ऐसे–2 समझा सर्विस कर सकते हैं। बड़े–2 आदमियों को भी समझाना है। कितने टाइटिल मिलते हैं। कहेंगे यह इतनी पोज़िशन वाला है। यह तो बहुत ऊँची बात सुनाते हैं। बड़े आदमियों का बड़े आदमियों से ही मुँह लगता है। तो बाप कहते हैं बड़े आदमियों को पकड़ना है। भल पहले ग़रीब ही पढ़ते हैं; परन्तु साहुकारों को भी उठाना चाहिए। जो समझावे । तुम्हारा तो कोई टाइटिल आदि है नहीं। तुम बच्चियाँ सभी अनपढ़ी हो। मनुष्यों को सब याद रहता है। यह–यह इम्तहान पास किया है। सभी खुरकता है। तुमको तो वह भी नहीं खुरकता। सभी भूसा निकाल दिया है। नया ज्ञान धारण होता रहता है। बाप भी साधारण है। आकर कुब्जाएं, भीलनियाएं, अहिल्याएं को ही उठाते हैं। अभी कृष्ण वैश्याओं पास जावेंगे क्या? यह तो बाप ही आकर पढ़ाते हैं। बाप ने समझाया है वैश्याएं हैं अधम ते अधम। वह अच्छी रीत आकर समझें, उनको रहना भी तो अपने ही घर में है। ऐसे नहीं उन्हों को हम खिलावेंगे, रहावें। बोलती हैं हम यह पढ़ाई पढ़ें फिर हमको खिलावेंगे कौन? अरे, तुम जैसी घर में रहती हो वैसी रहो। छुट्टी लेकर सिर्फ़ आकर पढ़ो। तुम जेल में जाकर समझाते हो; परन्तु उ(स) पर टीप तो बड़ी है ना।

गवर्मेन्ट क्या जाने? वह कोई छुट्टी थोड़े ही दे सकेंगे। तुम कहां तक बैठ समझावेंगे। हां, जाकर जेलर को समझाओ तो ऐसे–2 सर्विस का खयालात सारा दिन चलना चाहिए। इस समय तो तुम ड्रामा अनुसार सर्विस करते आये हो। तुम कह सकते हो हम बाप के द्वारा सभी कुछ पढ़ लेते हैं। कुछ भी पढ़ने की नॉलेज रहती नहीं है। यह है होल सेल नॉलेज। इससे हम सभी बन जाते हैं। वह तो है रेजकारी। हम सभी कुछ पढ़ लेते हैं। बाप को कोई फ़िक्र नहीं। बच्चों को भी फ़िक्र नहीं। जो कुछ तुम करते हो बाबा समझते हैं कल्प पहले भी किया था। डिससर्विस कल्प पहले भी की थी। अपना ही पद भ्रष्ट किया है। बाप को फ़िक्र नहीं है। शान्ति जैसी कोई चीज़ है नहीं। चुप रहना है। तुम्हारे कोई चीज़ तोड़–फोड़ जावेंगे तुमको हाथ नहीं लगावेंगे। सो भी बाबा के योग में होंगे तो। याद से ही सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। कैरेक्टर्स को सुधारना सारा याद पर है। जितना याद में रहेंगे उतना ही कैरेक्टर्स सुधरेगा। माया भल कितना भी हैरान करे तुमको हनुमान मिसल अडोल रहना है। हनुमान एक तो नहीं होगा ना। ल.ना. की भी डिनायस्टी होगी। जैसे एडव(र्ड) दी फर्स्ट, एडव(र्ड) दी सैकण्ड चलता है ना। वैसे महाराजा फर्स्ट, सैकण्ड, फिर थर्ड फिर राजा फर्स्ट ,सेकण्ड ..... चलता है। कृष्ण के राज्य का क्रिश्चियन की हाथ कनेक्शन नहीं है लेन–देन का। भारत से बहुत लिया है फिर देने का भी है। ऑटो(मेटि)कली चलता रहता है। देते भी आई....के टाइम हैं। इस समय भारत को ज़रूरत है। उस समय उन्हों को ज़रूरत थी। तो सभी ले गये। यह सभी बातें बाप बिगर कोई समझा न सके। वह तो नॉलेजफुल का अर्थ भी नहीं समझते। हरेक मनुष्य की अपनी–2 बात है। अनेक मत मतान्तर है। बाप को जानते थोड़े ही हैं। जानते तो याद भी करें। अभी तुमने बाप को जाना है। बाप ने समझाया है भक्ति का भी पार्ट है। भक्तमाल भी होते हैं। जो बहुत अच्छी भक्ति करते हैं उसमें भी तो ज़रूर पहले नम्बर में तो होंगे ना। नाम–रूप देश–काल बदलता जाता है। तुमने ही भक्ति शुरू की है। तो सबसे जास्ती भक्त भी तुम हो। जो ज्ञान माल में उंच बने होंगे उन्होंने ही बहुत भक्ति की होगी। तुम्हारे में ही भक्त बने हैं, जो फिर आकर ज्ञान लेते हैं। बाप भी कहते हैं जो बहुत अच्छा भक्त होगा पहले वाला वही इस ज्ञान को समझ जावेगा। पीछे वाला इतना नहीं समझेगा। जिन्होंने भक्ति की है उन्हों को ही बाप आकर फल देते हैं। वही जास्ती पढ़ेंगे। ..... मालूम पड़ जावेगा। सुनने से चेहरा कैसे हो जाता है? बाप में लव कितना है वह भी मालूम पड़ता है। बच्चों को तो बहुत प्यार होना चाहिए। आत्मा बाप को देखती है। बाबा हमको पढ़ाते हैं। बाप भी समझते हैं हम इतनी छोटी बिन्दी को बैठ पढ़ाता हूं। तुमको बिन्दी याद नहीं आती है; परन्तु समझ गये हो। आगे चलकर यह समझेंगे हम भाई–2 को पढ़ाते हैं। सिकल भल बहिन की है; परन्तु दृष्टि आत्मा तरफ जावेगी। शरीर पर दृष्टि न जाये। इसमें ही बड़ी मेहनत है। हम भाई–2 समझकर पढ़ावें। जानते हैं आत्मा बिन्दी है। उनमें सारा ज्ञान भरा हुआ है। बहुत भारी माल है। बहुत भारी पढ़ाई है। इनके भेंट में वह तो पाई–पैसे की है। वज़न करो तो इस पढ़ाई के तरफ बहुत भारी हो जावेगा। बाप कहते हैं मैं आत्माओं को पढ़ाता हूं। तो आत्मा को रियलाइज़ करना है कि वह क्या चीज़ है। बाप को बैठ रियलाइज़ कराना होता है कि आत्मा ऐसी है। मनुष्यों की बुद्धि में तो बैठा हुआ है परमात्मा हज़ारों सूर्यों से तेजोमय है। तो उनको वही सा. होगा। जैसे अर्जुन का मिसाल देते हैं। उसने कहा मैं तेज सहन नहीं कर सकता हूं। पहले–2 ऐसे भी बहुतों को सा. होते थे। मनुष्य समझेंगे उनको भगवान का सा. हो गया। हम कहेंगे कुछ भी नहीं। ऐसे तो भगवान है नहीं। यह तो जैसे भावना है उस अनुसार ही सा. होता है। तो हम एवर हेल्दी–वेल्दी 21 जन्मों लिए कैसे बनते हैं यह समझाना पड़े। बाबा ने समझाया था ऐसे–2 बोर्ड लगा दो। दर पर लगा हुआ हो। 21 जन्म लिए सदा निरोगी कैसे बन सकते हैं आकर समझो। कितना सहज है। लिखा हुआ भी है भगवानुवाच। कब गीता पढ़ी है? उसमें क्या लिखा हुआ है बाप कहते हैं अपन को आत्मा (समझ) मामेकं याद

करो। आत्माओं का बाप परमात्मा शिव ही ठहरा। उनको याद करने से पाप कट जावेगा। यही प्राचीन राजयोग है। तुम हो स्प्रीचुअल डॉक्टर। तो ऐसे–2 विचार–सागर–मंथन करो। कैसे युक्ति रचें जो फट से मनुष्य आ जाये। नाम बाला हो जाये। बड़े आदमियों का नाम अखबार में भी झट आ जाता है। कहेंगे यह तो डॉक्टर ऐसा है जो हेल्थ–वेल्थ फोर जनरेशन मिलते हैं। डॉक्टर ऑफ नॉलेज। कितना अच्छा नाम है। ऐसे नाम का मैं नहीं समझता हूं कोई होगा। विलायत में भी जाकर बहुत सर्विस कर सकते हैं। वह जो मनुष्यों को ठग कर ले आते हैं। यह सभी हैं रिद्धि–सिद्धि। बहुत सीखते हैं रिद्धि–सिद्धि। उन्हों के भी बड़े किताब होते हैं। तुम्हारा इस ज्ञान (में) तो कोई किताब है नहीं। बाप कहते हैं मैं खुद तुमको ज्ञान देता हूं। फिर किताब कोई रहता ही नहीं है। तुमको बाप ने यह पढ़ाई पढ़ाई है। धर्म भी स्थापन होता है। मनुष्यों को कुछ भी धर्म का पता नहीं है। ऐसा कोई मनुष्य नहीं हो जो कहे बाप आकर ब्राह्मण कुल स्थापन करते हैं। सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी डिनायस्टी आकर स्थापन करते हैं। इस समय की पढ़ाई आधा कल्प सुख देती है। तो बाहर में जो जाकर इन महाऋषियों आदि पास फंसे हैं उनको तुम सावधान कर सकते हो। प्राचीन योग तो गॉडफादर ने सिखाया था। मनुष्य थोड़े ही सिखाये सकते हैं। अखबार में भी पड़ जाये कि कोई भी देहधारी मनुष्य कब योग नहीं सिखला सकते। गॉडफादर लिबरेटर गाइड है। सभी दुःखों से दूर कर सुख में साथ ले जाते हैं। जिसको तुम पैराडाइज़ सुप्रीम पीस का स्थान भी कहते हो। कितना मनुष्य फंस जाते हैं। उन्हों को जैसी रिद्धी–सिद्धी से राजाई मिल जाती है। बहुत ठगते हैं। तो इनसे बचाना चाहिए। कहां से कहां ले आते हैं। बाबा जो कहते रहते थे विलायत में भी इन्द्र और मोहिनी को भेजें। अभी तो माथुर जी विलायत में आते और जाते रहते हैं। ज्ञान पर अटेन्शन भी है। वहां के जो भी मट(ठ) आदि हैं सभी को समझावें भारत का प्राचीन योग यह है नहीं। प्राचीन अर्थात् पहला–2। वह तो होता है कलयुग और सतयुग के बीच में। गॉडफादर ही नॉलेजफुल है। वही आकर योग सिखाते हैं कि मामेकं याद करो। इसमें हठयोग आदि की कुछ भी बात नहीं। सिर्फ़ कहते हैं मेरे बच्चे मामेकं याद करो। तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो अंत गते सो गति हो जावेगी। सतोप्रधान बनने लिए बाप का यह यह ऐलान है। अखबार में ऐसी बात पड़ जाये तो माथुर जी का कितना नाम हो जायें फिर इस पर टाइटिल भी देवें डॉक्टर ऑफ स्प्रीचुअल नॉलेज। रूहानी ज्ञान ाक नम्बर वन डॉक्टर। तुम भी रूहानी डॉक्टर हो ना। एवर हेल्दी बनाने वाले डॉक्टर बौर कोई होते नहीं। यह भी बातें बुद्धि में धारण करनी है। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं धंधा आदि न करो। जहां–तहां यह रूहानी सर्विस करो। विलायत में ठका हो जाये तो हिन्दुस्तान में भी हो जाये। बच्ची ने प्रश्न का रेसपॉन्ड ठीक दिया। पहले–2 बाबा ज्ञान देते हैं। योग के लिए भी ज्ञान देते हैं। योग से पावन बनते हैं। ज्ञान से फिर वर्सा पाते हैं। बाकी वह तो सभी है भक्तिमार्ग। मन्दिर आदि में कितने ढेर मूर्तियां रहती है। जितनी मूर्तियां होगी उतने पैसे चढेंगे। बाप कहते हैं यह भक्तिमार्ग का धंधा फिर भी होगा। शिव के मन्दिर में तुम बहुत सर्विस कर सकते हो; इसलिए ही बनारस को पकड़ा हुआ है। वहां से भी बहुत नाम होगा। झूठे टाइटिल्स देते रहते हैं। तुमको कहते हैं तुमने शास्त्र पढ़ी है। बोलो शास्त्र तो हम जन्म–जन्मांतर पढ़ते आये हैं भक्ति करते आये हैं, भक्ति के बाद ही भगवान मिलेगा ज्ञान से सद्गति मिलेगी। भक्ति दुर्गति में ले जाते हैं तब ही बाप आकर सद्गति में ले जाते हैं। खुला समझाओ। ऐसे नहीं कहना है हम इन शास्त्रों को नहीं मानते हैं। इससे तो दुर्गति होती है। समझाने की बड़ी युक्ति चाहिए। जितना हम पढ़े हैं, भक्ति जितनी हमने की है स्मृति है ना। बोलो, हम द्वापर के आदि से भक्ति करना, शास्त्र पढ़ना शुरू किये हैं, ऐसे बोलने से वह खुश हो जावेंगे। बाप कितना प्यार से बैठ समझाते हैं। बाप तो कोशिश करेंगे अच्छी रीत पढ़कर अपना ऊँच पद पा लेवें। मोस्ट बिलवेड बाप है। तुमको भी बहुत प्यारा बनाते हैं पढ़ाई से। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।